कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



उपनिवेशों में औद्योगीकरण

- भारत पर नज़र डालने से पता लगता है कि एक उपनिवेश का औद्योगीकरण कैसे होता है।
- हम गैर-मशीनी क्षेत्र के साथ-साथ कारखाना उद्योग को देखेंगे।
- हमारा अध्ययन मुख्य रूप से कपड़ा उद्योग तक ही सीमित रहेगा।

भारतीय कपड़े का युग

- मशीनी उद्योगों के युग से पहले अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाज़ार में भारत के रेशमी और सूती उत्पादों का ही दबदबा रहता था।
- बहुत सारे देशों में मोटा कपास पैदा होता था लेकिन भारत में पैदा होने वाला कपास महीन किस्म का था।

स्थल मार्ग से व्यापार :-

- आर्मीनियन और फारसी सौदागर पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य एशिया के रास्ते यहाँ की चीज़ें लेकर जाते थे।
- यहाँ के बने महीन कपड़ों के थान ऊँटों की पीठ पर लाद कर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों और रेगिस्तानों के पार करते हुए ले जाए जाते थे।

जल मार्ग से व्यापार :-

- यहां के बंदरगाहों से फलता-फूलता समुद्री व्यापार चलता था।
- गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के ज़रिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।
- दूसरी तरफ पूर्व में कोरोमंडल तट पर मछलीपटनम और बंगाल में हुगली के माध्यम से भी दक्षिण-पूर्वी एशियाई बंदरगाहों के साथ खूब व्यापार चलता था।

व्यापारी तथा सौदागर :-

- इस निर्यात व्यापार में बहुत सारे भारतीय व्यापारी और बैंकर सक्रिय थे।
- वे उत्पादन में पैसा लगाते थे,
  चीज़ों को लेकर आते थे
  और निर्यातकों को पहुँचाते थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

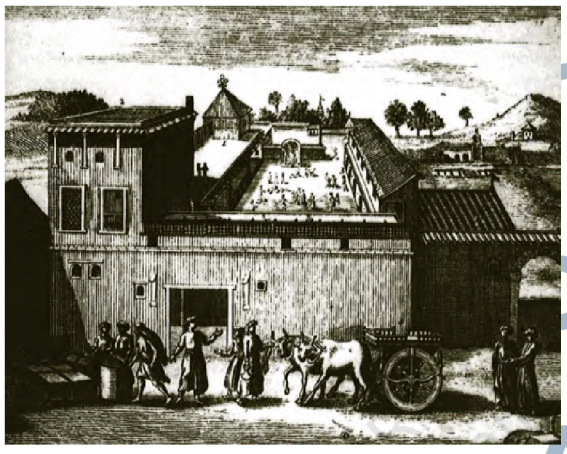
कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- ये माल भेजने वाले आपूर्ति सौदागरों के जरिये बंदरगाहों, नगरों तथा देशों के भीतरी इलाकों से जुड़े हुए थे।
- ये सौदागर बुनकरों को पेशगी देते थे, फिर बुनकरों से तैयार कपड़ा खरीदते थे और उसे बंदरगाहों तक पहुँचाते थे।
- बंदरगाहों पर निर्यात-व्यापारियों के दलाल मोल-भाव करके आपूर्ति सौदागरों से माल खरीद लेते थे।
- 1790 के दशक तक भारतीय सौदागरों वाला यह नेटवर्क टूटने लगा था।

यूरोपीय कंपनियों का प्रवेश एवं नियंत्रण

- अब यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी।
- पहले उन्होंने स्थानीय दरबारों से कई तरह की रियायतें हासिल कीं और फिर उन्होंने व्यापार पर इज़ारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिए।
- इससे सूरत व हुगली, दोनों पुराने बंदरगाह कमज़ोर पड़ गए।
- इन बंदरगाहों से होने वाले निर्यात में नाटकीय कमी आई।
- पहले जिस कर्ज़ से व्यापार चलता था वह खत्म होने लगा।
- धीरे-धीरे स्थानीय बैंकर दिवालिया हो गए।
- 17वीं सदी के आखिरी सालों में सूरत बंदरगाह से होने वाले व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रुपये था। 1740 के दशक तक यह गिर कर केवल 30 लाख रुपये रह गया था।
- सूरत व हुगली कमज़ोर पड़ रहे थे और बंबई व कलकत्ता की स्थिति सुधर रही थी।
- पुराने बंदरगाहों की जगह नए बंदरगाहों का बढ़ता महत्त्व औपनिवेशिक सत्ता की बढ़ती ताकत का संकेत था।
- नए बंदरगाहों के ज़रिए होने वाला व्यापार यूरोपीय कंपनियों के नियंत्रण में था और यूरोपीय जहाज़ों के ज़रिए होता था।
- बहुत सारे पुराने व्यापारिक घराने ढह चुके थे। जो बचे रहना चाहते थे उनके पास भी यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के नियंत्रण वाले नेटवर्क में काम करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

सूरत में एक इंग्लिश फैक्ट्री, 17वीं सदी का चित्र



बुनकरों का क्या हुआ?

- 1760 के दशक के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता के सुदृढ़ीकरण की शुरुआत में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट नहीं आई।
- ब्रिटिश कपास उद्योग अभी फैलना शुरू नहीं हुआ था तथा यूरोप में बारीक भारतीय कपड़ों की भारी माँग थी।
- इसलिए कंपनी भी भारत से होने वाले कपड़े के निर्यात को ही और फैलाना चाहती थी।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

कंपनी के लिए माल की आपूर्ति समस्या

- 1760 और 1770 के दशकों में बंगाल और कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी को निर्यात के लिए लगातार सप्लाई नहीं मिल पाती थी।
- बुने हुए कपड़े को हासिल करने के लिए फ़्रांसीसी, डच और पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी होड़ में रहते थे।
- इस प्रकार बुनकरों और आपूर्ति सौदागरों के बीच खूब मोल-भाव होता था और वे अपना माल सबसे ऊँची बोली लगाने वाले खरीदार को ही बेचते थे।
- लंदन भेजे गए अपने पत्रों में कंपनी के अफसरों ने ऊँचे दामों तथा आपूर्ति में आने वाली मुश्किलों का बार-बार जिक्र किया है।

कंपनी का नियंत्रण

- एक बार ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक सत्ता स्थापित हो जाने के बाद कंपनी ने व्यापार पर अपना एकाधिकार करना प्रारम्भ किया।
- फलस्वरूप अब कंपनी ने प्रबंधन एवं नियंत्रण व्यवस्था लागू की जिसमें-

(i) प्रतिस्पर्धा खत्म करने
(ii) लागतों पर अंकुश रखने
(iii) कपास व रेशम से बनी चीज़ों की

नियमित आपूर्ति करने के लिए व्यवस्था की गई।

- यह काम कई चरणों में किया गया।

प्रथम चरण :-

- कंपनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों और दलालों को खत्म करने की कोशिश की।
- बुनकरों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने का प्रयास किया।
- कंपनी ने वेतन भोगी कर्मचारी तैनात कर दिये जिनका कार्य :-

(i) बुनकरों पर निगरानी रखना
(ii) माल इकट्ठा करना
(iii) कपड़ों की गुणवत्ता जाँचना।

दूसरा चरण :-

- कंपनी को माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीदारों को माल बेचने पर पाबंदी लगा दी गई।
- इसके लिए उन्हें पेशगी रक़म दी जाती थी।
- एक बार काम का ऑर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए क़र्ज़ा दे दिया जाता था।
- जो क़र्ज़ा लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था। किसी और व्यापारी को नहीं बेच सकते थे।

बुनकरों पर प्रभाव :-

- बुनकरों को जैसे-जैसे कर्ज़े मिलते गए और महीन कपड़े की माँग बढ़ने लगी, ज़्यादा कमाई की आस में बुनकर पेशगी स्वीकार करने लगे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- बहुत सारे बुनकरों के पास जमीन के छोटे-छोटे पट्टे थे जिन पर वे खेती करके अपने परिवार को पालते थे।
- अब वे इस जमीन को भाड़े पर देकर पूरा समय बुनकरी में लगाने लगे।
- अब पूरा परिवार यही काम करने लगा।
- बच्चे व औरतें, सभी कुछ न कुछ काम करते थे।



काम पर लगा एक बुनकर, गुजरात

बुनकरों व गुमाश्तों के बीच टकराव :-

- जल्दी ही गाँवों से बुनकरों और गुमाश्तों के बीच टकराव की खबरें आने लगीं।
- इससे पहले आपूर्ति सौदागर इन बुनकरों के गाँवों में ही रहते थे और बुनकरों से उनके नज़दीकी ताल्लुकात होते थे।
- वे बुनकरों की ज़रूरतों का खयाल रखते थे और संकट के समय उनकी मदद करते थे।
- नए गुमाश्ता बाहर के लोग थे।
- उनका गाँवों से पुराना सामाजिक संबंध नहीं था।
- वे दंभपूर्ण व्यवहार करते थे, सिपाहियों व चपरासियों को लेकर आते थे और माल समय पर तैयार न होने की स्थिति में बुनकरों को सज़ा देते थे।
- सज़ा के तौर पर बुनकरों को अकसर पीटा जाता था और कोड़े बरसाए जाते थे।
- अब बुनकर न तो दाम पर मोलभाव कर सकते थे और न ही किसी और को माल बेच सकते थे।
- उन्हें कंपनी से जो कीमत मिलती थी वह बहुत कम थी पर वे कर्जों की वजह से कंपनी से बँधे थे।
- कर्नाटक और बंगाल में बहुत सारे बुनकर गाँव छोड़ कर चले गए।
- वे अपने रिश्तेदारों के यहाँ किसी और गाँव में करघा लगा लेते थे।
- कई स्थानों पर कंपनी और उसके अफसरों का विरोध करते हुए गाँव के व्यापारियों के साथ मिलकर बुनकरों ने बगावत कर दी।
- कुछ समय बाद बहुत सारे बुनकर कर्ज़ा लौटाने से इनकार करने लगे।
- उन्होंने करघे बंद कर दिए और खेतों में मज़दूरी करने लगे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here